तकनीकी का इजाद invention है जबकि invention को उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयुक्त करने को ही innovation कहते है। जिससे तकनीकी परिवर्तन एवं आर्थिक विकास होता है। तकनीकी परिवर्तन को निम्नलिखीत तरीकों से समझ सकते है-

ⓐ वैज्ञानिक सिद्धान्तों की स्थापना के माध्यम से

ⓑ वैज्ञानिक सिद्धान्तों को तकनीकी समस्या के समाधान में प्रयुक्त करना

ⓒ शोध एवं विकास द्वारा साधनों के अनुकूलतम उपयोग स्तर की प्राप्ती करना

ⓓ वैज्ञानिक सिद्धान्तों का सफलतापूर्वक तकनीकी समस्याओं पर उपयोग करके वाणिज्यक दृष्टि से अधिक उत्पादन एवं आय प्राप्त करना

इन सभी तरीकों का उपयोग कर आय, बचत, विनियोग, उत्पादन एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती है। जिससे आर्थिक विकास की दर में वृद्धि हो जायेगी।

4. राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं आर्थिक विकास दर तीव्र होना

राष्ट्रीय आय की मात्रा एवं दर ~~के~~ वृद्धि को ही आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है। बचत में वृद्धि से पूंजी निर्माण में वृद्धि होती है जिससे विनियोग में वृद्धि होती है। जिससे लोगों को प्राप्त होने वाले रोजगार में वृद्धि होती है। रोजगार में वृद्धि होने से लोगों की आय में वृद्धि होती है जिससे पहले से और अधिक बचत होती है। अर्थव्यवस्था में लगातार बचत तथा पूंजी निर्माण होने लगता है। बचत एवं पूंजी निर्माण में वृद्धि से विनियोग

रोजगार, आय तथा आर्थिक विकास दर में वृद्धि होने लगता है।

5. तकनीकी प्रगति से प्राकृतिक साधनों का अधिकतम उपयोग होना -

तकनीकी प्रगति उत्पादन की नई प्रणालियों तथा उसके लिए जरूरी नये यंत्रों के आविष्कार को कहते हैं। जिन्हे उपलब्ध करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक पूंजी की जरूरत होती है जो पूंजी निर्माण से ही संभव है। इससे एक ओर जहाँ देश की प्राविधिक प्रगति होती है दूसरी ओर प्राकृतिक साधनों का अधिक उपयोग भी संभव हो जाता है। फलत: देश की आर्थिक प्रगति भी तेजी से होने लगती है।

6. उत्पत्ति लागत में ह्रास होना -

नवीन तकनीकी तथा सफल नवप्रवर्तन का उपयोग कर उत्पादन कर्ताओं द्वारा कई तरह की आंतरिक एवं बाह्य मितव्ययिताएं की प्राप्ति होती है जैसे - तकनीकी मितव्ययिता, विपणन मितव्ययिता, यातायात मितव्ययिता, श्रम मितव्ययिता आदि प्रति ईकाई लागत में ह्रास से उत्पादक अनुकूलतम फर्म आकार की प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है।

7. नवीन तकनीकी से आरम्भ की जोखिम को कम करना -

नवीन तकनीकी एवं सफल नवप्रवर्तन के द्वारा उद्यमी उद्योग के आरंभ के जोखिम को कम करता है। तकनीकी परिवर्तन के द्वारा आर्थिक संवृद्धि दर में वृद्धि किया जाता है। नये नये

नवप्रवर्तन जब उद्यमियों द्वारा किये जाते हैं तो इससे उत्पादन फलन परिवर्तित हो जाता है तथा अर्थव्यवस्था को अधिक राष्ट्रीय उत्पादन की प्राप्ती होती है किन्तु इसके लिए सही तकनीकी का चयन आवश्यक होता है।

—×—

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College